

Padma Shri



SHRI KALI PADA SAREN

Shri Kali Pada Saren is a retired employee of State Bank of India and has played a pioneering role in removing illiteracy and prejudices from Santal society. Shri Kalipada Saren is a writer, singer and dramatist. He is known as Kherwal Saren in Santal society.

2. Born on 9th December, 1957, Shri Saren received his Bachelor of Arts degree from Kapgari Seva Bharati Mahavidyalaya, Kapgari, West Bengal in 1980 and MA (Political Science) degree from Rabindra Bharati University, Kolkata in 1984. His books are included in the syllabi of schools, colleges and universities.

3. Shri Saren founded "Marshal Gaonta" an organization associating friends and well wishers of the society on 30th June, 1984. Thereafter, under the platform of Marshal Gaonta, they launched a monthly Santali literary magazine "Rimil" which was renamed as "Aven Sankowa" later on, the editor of which was Shri Kalipada Saren himself. He has brought a great revolution in every field of Santali literature — in drama, in poetry, in novel, in short story, in essay writing, in song writing, in belles-lettres. Shri Saren created a great stir through his pennames —sometime he is Mister Thungu, Saptarsi Saren, Pati Ojha and again sometimes he is Benja Mara, NabinSaren etc. etc. Thus Kherwal has become a living legend in the field of Santali literature. His writings are being published in many literary magazines since 1980. As such his multifaceted talent as a writer has been reflected through Santali leading magazines- "Pachim Bangla", "Kherwal Jarpa", "Kuhu", "Sili", "Tetre" and etc.

4. Shri Saren founded a "Kherwal dramatic club" in Kolkata in 1990. Kherwal Dramatic Club had staged dramas of Shri Saren (his pen name Kherwal Saren) in santal belts of Bihar, Orissa, Jharkhand and Bengal for developing their socio-educational and cultural institutions from 1990 to 2006. The aims and objects of the Kherwal Dramatic Club were to remove illiteracy and prejudices form the Santal society and have succeeded remarkably.

5. Shri Saren is the recipient of numerous awards and honours. He has been adorned by numerous awards for his outstanding contribution in Santali literature; 'Pandit Raghunath Murmu award' by All India Santali Writers 'Association' in 2004; 'Sarada Prasad Smriti Puraskar' by Paschim Bangla Santali Academi, Government of West Bengal in 2013 and Sahitya Akademi Translation Award' (New Delhi) in 2020.

पद्म श्री



श्री कालि पद सरेन

श्री कालि पद सरेन भारतीय स्टेट बैंक के एक सेवानिवृत्त कर्मचारी हैं और इन्होंने संथाल समाज से निरक्षरता और भ्रांतियों को दूर करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। श्री सरेन एक लेखक, गायक और नाटककार हैं। इन्हें संथाल समाज में खेरवाल सरेन के नाम से जाना जाता है।

2. 09 दिसंबर, 1957 को जन्मे, श्री सरेन ने वर्ष 1980 में कपगरी सेवा भारती महाविद्यालय, कपगरी, पश्चिम बंगाल से कला स्नातक की डिग्री और वर्ष 1984 में रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता से स्नातकोत्तर (राजनीति विज्ञान) की डिग्री हासिल की। इनकी पुस्तकों को विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

3. श्री सरेन ने अपने साथियों और समाज के शुभचिंतकों को जोड़कर दिनांक 30 जून, 1984 को "मार्शल गोंटा" संगठन की नींव रखी। तत्पश्चात मार्शल गोंटा की छत्रछाया में उन्होंने एक मासिक संथाली साहित्यिक पत्रिका "रिमिल" की शुरुआत की जिसे बाद में "एवेन संकोवा" के रूप में पुनः नामित किया गया था, इस पत्रिका के संपादक स्वयं श्री सरेन थे। वे संथाली साहित्य—नाटक, कविता, उपन्यास, लघु कथा, निबंध लेखन, गीत लेखन, बेले लैटर्स के क्षेत्र में एक बड़ी क्रांति के प्रणेता बने। श्री सरेन ने अपने उपनामों के माध्यम से एक बड़ी हलचल पैदा की, कभी वे मिस्टर थूंगू, सप्तर्षी सरेन, पति ओझा होते हैं तो कभी वे बेंजा मारा, नबीनसरेन इत्यादि—इत्यादि होते हैं। इनके लेख वर्ष 1980 से विभिन्न साहित्यिक पत्रिका में प्रकाशित किए जा रहे हैं। इस प्रकार एक लेखक के रूप में उनकी बहुमुखी प्रतिभा का दिग्दर्शन संथाली प्रमुख पत्रिकाओं — "पचिम बांग्ला", "खेरवाल जारपा", "कुहू", "सिली", "टेत्रे" इत्यादि के माध्यम से होता है।

4. श्री सरेन ने वर्ष 1990 में कोलकाता में "खेरवाल रंगमंच क्लब" की स्थापना की। खेरवाल रंगमंच क्लब ने बिहार, ओड़िशा, झारखंड और बंगाल के संथाल परगनों में श्री सरेन (उनका उपनाम खेरवाल सरेन) के नाटकों का मंचन किया ताकि उनकी सामाजिक—शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थाओं का विकास किया जा सके (वर्ष 1990 से 2000 तक)। खेरवाल रंगमंच क्लब का लक्ष्य और उद्देश्य संथाल समाज से निरक्षरता और भ्रांतियों को दूर करना था और इसमें वे काफी हद तक सफल हुए हैं।

5. श्री सरेन को कई पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। उन्हें संथाली साहित्य में उनकी उल्लेखनीय योगदान के लिए कई पुरस्कारों से विभूषित किया जा चुका है; जैसे अखिल भारतीय संथाली लेखक संघ द्वारा 'पंडित रघुनाथ मुर्मू पुरस्कार (2004)', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार (2007)'; पश्चिमी बंगाल संथाली अकादमी, पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा 'शारदा प्रसाद स्मृति पुरस्कार (2013)' और 'साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार' (2020)।